NJESR/February-2022/Volume-4/Issue-2. E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2022.4.2.12-25

वर्तमान भारतीय युवा पीढ़ी में असंतोष और आत्महत्या की समस्या

डा० दीपा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
रा० म० वि० मंगलोर हरिद्वार उत्तराखंड
Mail id deepaarv18@gmail.com

(Received:5january 2022/ Revised:20january 2022/ Accepted:29 January 2022/published:10 February 2022)

सार

प्रस्तुत लेख में वर्तमान में युवाओं के समक्ष आने वाली असंतोष की स्थिति से उत्पन्न आत्महत्या की समस्या का विस्तृत वर्णन किया गया है जिसमें बताया गया है, कि आत्महत्या क्या है ? दुर्खीम ने लिखा है कि आत्महत्या शब्द का प्रयोग किसी भी ऐसी मृत्यु के लिये किया जाता है जो मृत व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले किसी सकारात्मक या नकारात्मक कार्य का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परिणाम होती है। प्रस्तुत लेख में आत्महत्याओं के कारणों पर वृहद प्रकाश डाला गया है एवं मनोवैज्ञानिक दशायें, जैवकीय दशायें, तथा भौगोलिक दशाओं एवं सामाजिक दशाओ के बारे में विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया गया है। लेख के अन्त में आत्महत्या जैसी भयावह समस्या को कम करने के उपायों का भी वर्णन किया गया है।

परिचय

भारतीय समाज वर्तमान समय में एक विघटन काल से गुजर रहा है, इस समय प्रत्येक क्षेत्र में असंतोष व्याप्त है, गरीबी के कारण आर्थिक असंतोष बढ़ता जा रहा है. समाज की दो पीढ़ियों में सामंजस्य न होने के कारण समाज में लगातार सामाजिक असंतोष पनप रहा है, हमारे समाज के युवाओं में असंतोष की समस्याएं एक अलग रूप ले रही है, जैसे भारतीय समाज का युवा वर्ग अपरिपक्व सा नजर आता है, बेरोजगारी,बेकारी जैसी समस्याओं के कारण असंतोष के दृश्य प्रतिदिन दिखाई दे रहे हैं, छात्र-छात्राओं और नवयुवकों, नवयुवतीयो में असंतोष के कई कारण हैं सबसे बड़ा कारण है,

बेकारी एवं आपरिपक्वता व बेरोजगारी आदि, दरअसल शिक्षा प्राप्त करने के बाद कोई भी युवक-युवती अधिक समय तक बेकार रहना नहीं चाहते उन्हें कोई ना कोई काम चाहिए होता है, जिससे की पढ़ने लिखने के बाद उन्हें तुरंत कार्य मिल जाए, दूसरा कारण यह है आज की युवा पीढ़ी में परिपक्वता एवं धैर्य की कमी है जिस शिक्षा को वह अपनी योग्यता मान रहा है वह एक डिग्री है मात्र एक डिग्री।उसकी काबिलियत नहीं उसका हुनर नहीं ।क्योंकि आज का युवा केवल नौकरी प्राप्त करने के लिए ही पढ रहा है। ज्ञान अर्जित करने के लिए या अनुशासन और नैतिकता के लिए नहीं,इसमें केवल युवा ही भागीदार नहीं है, बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली भी संतोषजनक है क्योंकि वर्तमान समय में विश्वविद्यालय की डिग्री को युवाओं के भविष्य का निर्णायक मान लिया जाता है। देश में महंगाई, नौकरशाही, रिश्वतखोरी, ने युवाओं को मार्ग भ्रष्ट कर दिया है यही कारण है कि अब युवा अनुशासन को विशेष व्यवहार नहीं मानता और किसी तरह डिग्रियां इकट्ठा करने में लगा रहता है, जिससे अंतत एक ऐसे युवा का जन्म होता है जो केवल भौतिकता को महत्व देता है, नैतिकता को नहीं, दरअसल युवावस्था एक ऐसी अवस्था होती है, जिसमें युवा, शक्ति संचित करता है उसके पास इस समय चुनौतियों से जूझने का अक्षय साहस होता है, इनका संगठन अटूट होता है, वह अपने अनुसार कुछ भी कर सकता है।

वर्तमान में युवा के पास वह शक्ति क्षीण होती दिखाई दे रही है, जो द्रोण और एकलव्य के पास थी, द्रोणाचार्य के एकलव्य से तो सभी अवगत होंगे । देश का इतिहास गवाह है । द्रोणाचार्य का एकलव्य आज निराश दिखाई देता है ।जो पत्थर को ठोकर मार कर जल निकाल लेने वाली युवा शक्ति रखता था, वही युवा आज पराजित मनोवृति लिए हुए हैं, वह दिशाहीन है, टूट कर बिखर रहा है । कारणवश युवा पीढ़ी को मधपान, मादक द्रव्य व्यसन, और आत्महत्या जैसी बुराइयों ने जकड़ रखा है इसमें सबसे बड़ी समस्या आत्महत्या है। जो कमजोर मानसिक स्थिति के कारण संभव हो रही है। आज का युवा अपने आप से संतुष्ट नहीं हो पाता, उसे ऐसा लगता है जैसे उसके पास अब एक ही विकल्प बचा है कि वह अपने आप को समाप्त कर ले जिसे हम आत्महत्या कहते हैं।

"आत्महत्या" शब्द का प्रयोग ऐसी किसी भी मृत्यु के लिए किया जाता है जो कि स्वयं मृत के द्वारा की गई सकारात्मक या नकारात्मक क्रिया का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परिणाम है। दुर्खीम"

आत्महत्या के सहसंबंध

1.आत्महत्या की दर प्रत्येक वर्ष लगभग एक समान रहती है।

2.सर्दियों की तुलना में गर्मियों में आत्महत्या होती है

3.महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में आत्महत्या अधिक होती है4.कम आयु की अपेक्षा अधिक आयु के व्यक्तियों में आत्महत्या की दर अधिक पाई जाती है।

5.गांव की तुलना में शहरों में आत्महत्या अधिक होती है।

6.सैनिक लोग आम जनता की अपेक्षा अधिक आत्महत्या करते हैं ।

7.कैथोलिक धर्म को मानने वालों की अपेक्षा प्रोटेस्टेंट धर्म को मानने वाले अधिकार में क्या करते हैं।

8.विधवा तथा लोगों में विवाहिता की आत्महत्या की दर अधिक पाई जाती है।

9.विवाहिता में बच्चे वालों की तुलना में वे लोग आत्महत्या करते हैं जिनके बच्चे पैदा नहीं होते या होकर मर जाते हैं।

आत्महत्या के कारण

आत्महत्या की विवेचना में दुर्खीम ने अनेक उन कारणों का उल्लेख किया जिनके आधार पर समय-समय पर आत्महत्या की विवेचना की जाती रही थी। दुर्खीम से पहले मनोवैज्ञानिकों,जीववादियों तथा भौगोलिकवादियों ने यह स्पष्ट किया था कि व्यक्ति कुछ मानसिक, जैविकीय तथा प्राकृतिक दशाओं के प्रभाव से आत्महत्या करते हैं। इसी आधार पर आत्महत्या के विभिन्न प्रकारों, जैसे- उन्मादपूर्णआत्महत्या संवेगात्मक आत्महत्या, निराशापूर्ण आत्महत्या तथा प्रेतबाधा आत्महत्या आदि का भी उल्लेख किया गया। दुर्खीम ने ऐसे सभी कारणों की निरर्थकता को स्पष्ट करते हुए आत्महत्या की सामाजिक कारणों के आधार पर व्याख्या की। इसलिए यह आवश्यक है कि आत्महत्या के मनोवैज्ञानिक, जैविकीय तथा भौगोलिक कारणों पर दुर्खीम के विचारों को समझने के साथ उन सामाजिक दशाओं का विस्तार से उल्लेख किया जाये तो दुर्खीम के अनुसार आत्महत्या का वास्तविक कारण है।

(1) **मनोवैज्ञानिक दशाएं** मनोवैज्ञानिक दशाओं में विभिन्न विद्वानों ने स्वभाव सम्बन्धी विशेषताओं, मानसिक बीमारियों,संवेगात्मक अस्थिरता, उन्माद तथा पातक की भावना आदि को आत्महत्या के प्रमुख कारणों के रूप में स्पष्ट किया था दुर्खीम के अनुसार इनमें से किसी भी कारण के आधार पर आत्महत्या की विवेचना नहीं की जा सकती।

(अ) स्वभाव सम्बन्धी विशेषताएँ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि कुछ व्यक्तियों का स्वभाव आत्महत्या के लिए अधिक अनुकूल होता है। जो लोग जीवन में बहुत अधिक आराम की कामना करते हैं, अधिक भावुक होते हैं, अधिक मनोरंजन पसन्द करते हैं तथा स्वभाव से अन्तर्मुखी होते हैं, उनके शान्त जीवन में थोड़ा भी व्यवधान पैदा होने से वे विचलित हो जाते हैं। आत्महत्या इसी दशा का परिणाम है। दुर्खीम ने अपने अध्ययन में यह पाया कि व्यक्तिगत स्वभाव तथा आत्महत्या के बीच कोई सह-सम्बन्ध नहीं है। आत्महत्या करने वाले व्यक्तियों में अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी दोनों तरह के स्वभाव वाले लोग होते हैं। दूसरी ओर, संवेग और भावना स्त्रियों के जीवन में अधिक होती है, जबकि आत्महत्या करने वाले लोगों में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों का प्रतिशत अधिक है।

(ब) मनोविकार इस तरह की मानसिक बीमारी है जो विभिन्न रूपों में आत्महत्या के लिए उत्तरदायी होती है।उदाहरण के लिए, व्यर्थ की चिन्ता से घिरे रहना, प्रत्येक दशा में निराशा अनुभव करना, स्नायुदोष का होना, स्वयं कोई निर्णय न ले पाना बहुत जल्दी दुःखी या प्रसन्न हो जाना आदि विभिन्न प्रकार के मनोविकार है। यह मनोविकार जब व्यक्ति के जीवन को बहुत असन्तुलित बना देते हैं तो वह अपने जीवन को बेकार समझकर आत्महत्या की ओर मुड़ जाता है। दुर्खीम ने यह सिद्ध किया कि मनोविज्ञान स्वयं आत्महत्या का कारण नहीं होते बल्कि स्वयं मनोविकार भी कुछ विशेष सामाजिक दशाओं का परिणाम होते हैं।इसका अर्थ है कि मनोविकार आत्महत्या के लिए प्रेरणा तो दे सकते हैं लेकिन आत्महत्या के वास्तविक कारण सामाजिक दशाओं में ही खोजे जा सकते हैं।

(स) संवेगात्मक अस्थिरता मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि आत्महत्या करने वाले लोगों में से अधिकांश लोग वे होते हैं जो स्थिर विचारों के नहीं होते, तर्क के आधार पर कोई निर्णय नहीं ले पाते तथा जिनकी सोच नकारात्मक होती है। ऐसे व्यक्ति सभी दूसरे लोगों को अपना विरोधी और आलोचक समझने लगते हैं। यही दशा उन्हें आत्महत्या करनेकी प्रेरणा देती है। दुर्खीम का कथन है कि मनोवैज्ञानिकों के अनुसार युवावस्था में संवेगात्मक अस्थिरता व्यक्ति में सबसे कम होती है ।

लेकिन बच्चों और वृद्धों की तुलना में युवा वर्ग के लोग अधिक आत्महत्या करते हैं। इसका तात्पर्य है कि संवेगात्मक अस्थिरता आत्महत्या का प्रमुख कारण नहीं । (द) उन्माद एक ऐसा मानसिक विकार है जिसमें व्यक्ति - अपनी किसी भी इच्छा के तनिक भी अपूर्ण रह जाने की दशा में एकाएक असामान्य व्यवहार करने लगता है। उसकी मानसिक स्थिति इतनी बिगड़ जाती है कि व्यक्ति असामान्य क्रियाएँ करने लगता है।अक्सर उन्माद की दशा में अकेला होने पर व्यक्ति आत्महत्या का शिकार हो जाता है दुर्खीम के अनुसार उन्माद पूरी तरह एक वैयक्तिक और काल्पनिक विशेषता है जिसके आधार पर आत्महत्या की व्याख्या नहीं की जा सकती। (य) पातक की भावना यह एक ऐसी भावना है जो किसी - कुकृत्य को करने के बाद व्यक्ति में स्वयं अपने प्रति घृणा की भावना उत्पन्न कर देती है। पातक की दशा में व्यक्ति हर समय अपने प्रति सशंकित रहने लगता है, वह अनिद्रा से घिर जाता है तथा उसमें इतनी अधिक हीनता पैदा हो जाती है कि धीरे-धीरे अकारण वह पूरे समूह को अपने विरुद्ध समझने लगता है। यही दशा उसे आत्महत्या की ओर ले जाती है। दुर्खीम पातक को एक मनोवैज्ञानिक दशा न मानकर एक सामाजिक दशा के रूप में देखते हैं क्योंकि पातक का कारण आन्तरिक नहीं बल्कि समाज की वाह्य दशाएँ होती है। कुछ मनोवैज्ञानिक मद्यपान को भी एक मनोवैज्ञानिक कारण मानते हुए इसके आधार पर आत्महत्या की विवेचना करते हैं लेकिन दुर्खीम ने यह सिद्ध किया कि स्पेन तथा फ्रांस जैसे देशों में जहाँ शराब का सबसे अधिकसेवन किया जाता है, वहाँ यूरोप के अनेक दूसरे देशों की तुलना में आत्महत्या की दर कम है।

(2) जैविकीय दशाएँ

दुर्खीम ने अनेक ऐसी मानसिक और जैविकीय दशाओं का भी उल्लेख किया जिन्हें अक्सर आत्महत्या का कारण मान लिया जाता है। जीववादी यह मानते हैं कि एक विशेष शारीरिक रचना तथा वंशानुक्रम से प्राप्त होने वाली विशेषताएं भी आत्महत्या की प्रेरणा देती है। इस दृष्टिकोण से दोषपूर्ण आनुवंशिक विशेषताएं असामान्य शारीरिक रचना तथा प्रजातीय लक्षण वे प्रमुख जैविकीय कारक है जिनका आत्महत्या से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है।

(अ) दोषपूर्ण आनुवंशिक विशेषताएं जीववादियों का विश्वास - है कि माता-पिता के अच्छे और बुरेसभी गुणों का वाहकाणुओं के द्वारा उनकी सन्तानों में संरक्षण होने की सदैव सम्भावना रहती है। माता-पिता में यदि स्नायु दोष या विभिन्न प्रकार के मनोविकार होते हैं तो अक्सर यह दोष उनकी सन्तानों में भी आ जाते हैं। इससे बच्चों में भी आत्महत्या की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। दुर्खीम ने आनुवंशिकता अथवा पैतृकता के आधार पर आत्महत्या की प्रवृत्ति का खण्डन किया। उनके अनुसार आनुवंशिकता पूरी तरह एक जन्मजात और आन्तरिक विशेषता है। जिसके आधार पर आत्महत्या जैसे वाह्य व्यवहार की विवेचना नहीं की जा सकती।

(ब) असामान्य शारीरिक रचना - जीववादी यह भी मानते हैं कि जिन व्यक्तियों की शारीरिक रचना असामान्य होती है, उनमें आत्महत्या की प्रवृत्ति अधिक देखने को मिलती है। इसका अर्थ है कि जो व्यक्ति बहुत अधिक भने, मोटे, नाटे, अपंग अथवा विकलांग होते हैं, अक्सर अपने जीवन के प्रति उनमें अधिक रूचि नहीं होती। शारीरिक विकृतियाँ उनके विचारों कोभी असन्तुलित बना देती है जिसका परिणम बहुधा आत्महत्या के रूप में देखने को मिलता है। दुर्खीम ने इस आधार को भी अस्वीकार करते हुए कहा कि असामान्य शारीरिक रचना तब तक आत्महत्या का कारण नहीं हो सकतीजब तक व्यक्ति का जीवन शेष समाज से बिल्कुल अलग न हो जाये। इसका तात्पर्य है कि असामान्य शारीरिक रचना स्वयं आत्महत्या का कारण नहीं होती बल्कि सामाजिक दशाओं के सन्दर्भ में ही उनके प्रभाव को समझा जा सकता है।

(स) प्रजातीय लक्षण - अनेक विद्वानों ने प्रजातीय लक्षणों के आधार पर भी आत्महत्या की व्याख्या करने का प्रयत्न किया है। सामान्य निष्कर्ष यह दिया जाता है कि गोरी प्रजाति की तुलना में काली प्रजाति के लोगों में आत्महत्या की दर अधिक होती है। इससे प्रजातीय लक्षणों और आत्महत्या का सहसम्बन्ध स्पष्ट होती है। दुर्खीम ने इसकी आलोचना करते हुए कहा कि कुछ समय पहले तक जिन प्रजातीय समूहों में आत्महत्या की दर अधिक थी, उनकी सांस्कृतिक दशाओं में परिवर्तन हो जाने स अब उनमें आत्महत्या की दर कम होती जा रही है। इससे भी यह स्पष्ट होता है ।

कि आत्महत्या का कारण जैविकीय दशाओं में नहीं बल्कि सामाजिक दशाओं में ही ढूँढ़ा जा सकता है।

(3) भौगोलिक दशाएँ

भौगोलिकवादी यह मानते हैं कि आत्महत्या तथा भौगोलिक दशाओं के बीच एक प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। भौगोलिक दशाओं का सम्बन्ध एक विशेष प्रकार की जलवायु ऋतु परिवर्तन तथा मौसमी तापमान में होने वाले उतार-चढ़ाव से है। डी० गूरे, वैगनर मॉण्टेस्क्यू डेक्सटर तथा फेरी आदि वे प्रमुख भौगोलिकवादी हैं जो अनेक दूसरे मानव व्यवहारों की तरह आत्महत्या को भी भौगोलिक दशाओं का परिणाम मानते हैं। दुर्खीम के विचारों के सन्दर्भ में आत्महत्या तथा भौगोलिक कारकों के सम्बन्ध को जानने से यह स्पष्ट हो जायेगा कि भौगोलिकवादियों के कथन को उपयुक्त नहीं कहा जा सकता।

(अ) जलवायु तथा आत्महत्या कुछ भौगोलिकवादी यह मानते हैं - कि जलवायु तथा आत्महत्या के बीच एक प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। यही कारण हैकि जलवायु म पारवतन हान के साथ आत्महत्या का दर म भा पारवतन देखने को मिलता है। उनके अनुसार समशीतोष्ण जलवायु में आत्महत्याएँ अधिक होती हैं। इसके विपरीत, अधिक गर्म या अधिक ठण्डी जलवायु में आत्महत्या की घटनाएँ तुलनात्मक रूप से कम होती है। इस सम्बन्ध में दुर्खीम ने लिखा है, "आत्महत्या की दर में पायी जाने वाली भिन्नता की खोज जलवायु के रहस्यात्मक प्रभाव में नहीं बल्कि विभिन्न देशों में पायी जाने वाली सभ्यता की प्रकृति में करना आवश्यक है।" इसका तात्पर्य है कि भौगोलिकवादियों ने जिस समशीतोष्ण जलवायु को अधिक आत्महत्याओं का कारण मान लिया है, उसका कारण वास्तव में इस जलवायु में विकसित होने वाली कुछ विशेष प्रकार की सामाजिक-सांस्कृतिक दशाएं है। इटली का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि यहाँ क विभिन्न भागों में समय-समय पर आत्महत्या की दर में काफी परिवर्तन होता रहा, जबकि वहाँ की जलवायु में किसी तरह का परिवर्तन नहीं हुआ। इससे यह प्रमाणित होता है कि आत्महत्या की घटनाओं की खोज सामाजिक और सांस्कृतिक दशाओं में ही की जा सकती है।

(ब) ऋतु-परिवर्तन-मॉण्टेस्क्यू ने ऋतु परिवर्तन और आत्महत्या के सहसम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए लिखा कि यूरोप में गर्मी में आत्महत्या की दर सबसे अधिक होती है और इसमें भी मई व जून का समय सबसे अधिक घातक होता है। बसन्तु ऋतु में आत्महत्या की दर साधारण होती है तथा सर्दियों में इसमें बहुत कमी हो जाती है। इस प्रकार आत्महत्या की दर में होने वाला परिवर्तन ऋतु परिवर्तन के साथ बहुत कुछ नियमित रूप में देखने को मिलता है।

दुर्खीम ने ऐसे निष्कर्षों को अस्वीकार करते हुए यह तर्क दिया कि आत्महत्या की दर की भिन्नता ऋतु परिवर्तन से सम्बन्धित नहीं है बल्कि व्यक्ति उस समय अपने जीवन को त्यागना अधिक पसन्द करते हैं जब मौसम उनके जीवन को सबसे कम प्रतिकूल रूप से प्रभावितकर रहा होता है। यह ऋतु परिवर्तन का सामाजिक सन्दर्भ है तथा यही सन्दर्भ कुछ सीमा तक आत्महत्या की दर से सम्बन्धित है। (स) तापमान फेरी जैसे एक प्रमुख भौगोलिकवादी ने यह निष्कर्ष दिया कि तापमान तथा आत्महत्या के बीच एक प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। उन्होंने अपने अध्ययन में यह पाया कि गर्मियों में जब तापमान अधिक होता है, तब आत्महत्या की घटनाओं में भी वृद्धि हो जाती है। दुर्खीम ने ऐसे निष्कर्षो की आलोचना करते हुए लिखा कि तापमान के थर्मामीटर का आत्महत्या में कोई सम्बन्ध नहीं है। यह सच है कि जब तापमान अधिक होता है तो आत्महत्याएँ अधिक होती है लेकिन इसका कारण यह है गर्मियों के मौसम में व्यक्ति स्वयं को अधिक अकेला महसूस करता है जिसके फलस्वरूप आत्महत्या की दर में वृद्धि हो जाती है।इस प्रकार दुर्खीम ने मनोवैज्ञानिक, जैविकीय तथा भौगोलिक दशाओं के आधार पर आत्महत्या की विवेचना को भ्रामक बताते हुए सामाजिक दशाओं को ही आत्महत्या की घटनाओं के लिए उत्तरदायी माना ।

सामाजिक दशाएं

1. दिवालिया होना या श्रणग्रस्तता.

वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति जो भी सुविधा प्राप्त कर रहा है वह कर्ज को बढ़ावा दे रही है कई बार हम घर बनाने या दुकान या कार लेने के चक्कर में बड़ा लोन ले लेते हैं जो चुकना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। ऐसी स्थिति में तनाव उत्पन्न होता है, जब कोई संस्था कानूनी रूप से यह घोषणा कर दे, कि उसके द्वारा लिया गया कर्ज चुकाने में वह असमर्थ है यानी कर इतना बड़ा हो की पूरी संपत्ति व्यापार घर जमीन आदि बेचकर कर चुकाना पड़ जाए तो उसे दिवाला कहते हैं, तथा उस व्यक्ति या संस्था को दिवालिया कहते हैं ऐसे में व्यक्ति कई बार मानसिक तनाव सहन नहीं कर पाता और वह अपने आप को समाप्त कर लेता है। भारत में कर संबंधी आत्महत्या का आंकड़ा लगभग 2308 है स्रोत विकीपीडिया 2014।

2.विवाह संबंधी मुद्दे.

आज का समय ऐसा है कि विवाह में भी बहुत सारी समस्याएं उत्पन्न हो रही है जैसे आज की पीढ़ी प्रेम विवाह को अधिक मान्यता दे रही है

जिसमें युवा कई बार घर से भागकर या कोर्ट मैरिज कर के विवाह करते हैं और माता-पिता इस तनाव को सहन नहीं कर पाते समाज के डर से यह लोग आत्महत्या भी कर लेते हैं कुछ केस ऐसे भी होते हैं जहां पर यदि लड़की या लड़के को अपने अनुरूप जीवन साथी नहीं मिला तो वो आत्महत्या को गले लगा लेते हैं। भारत में विवाह संबंधी मुद्दों में आत्महत्या का आंकड़ा लगभग 6773 है।

3.दहेज.

दहेज प्रथा हमारे समाज का एक ऐसा भयावह दानव है जिसने अब तक पता नहीं कितनी महिलाओं को या ग्रहणी को अपने गाल में समाहित कर लिया है भारत में यह है । वरदक्षिणा या हुंडा के नाम से जाना जाता है जिसमें संपत्ति विवाह के समय वधु के परिवार की तरफ से वर पक्ष को दी जाती है, यह एक बुराई है कई बार माता-पिता दहेज नहीं दे पाते तो उनकी बेटी को तरह-तरह से वर पक्ष की तरफ से प्रताड़ित किया जाता है जिससे तंग आकर वधु आत्महत्या कर लेती है, 2014 के अनुसार विकीपीडिया के अनुसार दहेज संबंधी आत्महत्या है लगभग 2261 है।

4.विवाहेत्तर संबंध.

हमारे समाज में वर्तमान समय में पति व पत्नी के पास समय की कमी हो गई है, जिस कारण अपने परिवार और विशेष रूप से अपने पति या पत्नी को समय नहीं दे पाते, इसका परिणाम यह होता है कि दोनों अपना सुख किसी दूसरे में देखने लगते हैं, और जब यह विषय सबके सामने आता है, तो ज्यादातर लोग आत्महत्या को गले लगा लेते हैं, भारत में इस प्रकार की आत्महत्या का आंकड़ा 416 है जो विकिपीडिया 2014 के अनुसार है।

5.तलाक.

आज हमारे देश में तलाक की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है, कारण व्यक्ति का अवसाद और मानसिक परेशानियां जिनकी वजह से वह अपने परिवार में तालमेल नहीं कर पाता और तलाक हो जाता है, तलाक के कारण ही व्यक्ति अपने आप को कमजोर समझने लगता है, वह अपनी समस्या को किसी से साझा नहीं कर पाता, ओर तनाव के कारण आत्महत्या कर लेता है, विकिपीडिया 2014 के अनुसार भारत में तलाक के बाद आने वाले आत्महत्या के आंकड़े लगभग 2607 है

6.परीक्षा में असफलता.

परीक्षा में असफल होने पर भी युवा वर्ग आत्महत्या कर लेता है,

क्योंकि वर्तमान युवा वर्ग सेंसेटिव हो गया है, आज का युवा वर्ग प्रतियोगिता की मार सहन नही कर पाता, ऐसे में वह या तो नशे का आदी हो जाता है या फिर सामान्य रूप से आत्महत्या कर लेता है, भारत में इस प्रकार की आत्महत्या के आंकड़े लगभग 2403 है।

नपुंसकता या बांझपन घर की अन्य समस्याएं.

प्रत्येक मनुष्य अपना हंसता खेलता परिवार चाहता है, परंतु जब किसी परिवार में बच्चा पैदा ना हो तो समाज उस परिवार को तरह-तरह के ताने देता है, कई बार ऐसी अश्लील सब लोगों को बोल दिए जाते हैं, जिससे व्यक्ति अपने आप को समाप्त कर लेता है, ऐसे में जीवित रहने की इच्छा समाप्त हो जाती है, हमारे देश में इस प्रकार के आत्महत्या के आंकड़े 22606 के करीब हैं।

7.प्रेम संबंध.

आज का युवा वर्ग भौतिकता को प्रेम मान रहा है और जब वह उसमें विफल हो जाता है, तो जाहिर है कि ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपने या तो नशे का सहारा ले लेगा या अपने आप को समाप्त करेगा, भारतीय समाज में प्रेम संबंधों के कारण होने वाले आत्महत्या के आंकड़े 4868 है जो विकिपीडिया 2014 के अंतर्गत है।

गरीबी एवं बेरोजगारी.

हमारे समाज की सबसे बड़ी समस्या और परंपरागत समस्या बेरोजगारी और गरीबी है जो पिछले 175 सालों से उसी स्थिति में बनी हुई है, जैसी में वह पहली थी व्यक्ति जब अपनी और अपने परिवार की आवश्यकता पूरी नहीं कर पाता तो निराश और हताश हो जाता हैं, जिससे वह आत्महत्या करना बेहतर समझता है यही नहीं बेरोजगारी भी हमारे समाज में दानव की तरह मुंह खोले खड़ी है, आज की युवा पीढ़ी अच्छी खासी डिग्री पास होने के बाद भी बेरोजगार है, ऐसे में वह अपने आप को असहाय महसूस करता है, और उनके पास विकल्प के लिए आत्महत्या बचता है इस प्रकार के आंकड़े **39061** जो विकिपीडिया के अंतर्गत 2014 के है।

संदिग्ध अवैध संबंध वह अवैध गर्भावस्था.

कुछ महिलाएं संदिग्ध अवैध संबंध और अवैध गर्भावस्था जैसे बलात्कार के कारण गर्भावस्था या फिर शारीरिक शोषण होने के कारण गर्भावस्था को समाज से छिपाने के लिए भी आत्महत्या कर लेती हैं, इस प्रकार के आंकड़े विकीपीडिया के अनुसार हमारे भारत में 2014 के लगभग 532 है।

8.पेशेवर कैरियर की समस्या.

आज के समय में हमारी पीढ़ी पढ़ लिख कर भी अपना कैरियर को अपनाने में असहज महसूस कर रही है, क्योंकि व्यक्ति के पास डिग्रियां तो हैं, परंतु काबिलियत अभी भी नहीं है जिसके कारण व्यक्ति समझ नहीं पाता कि वह किस कैरियर या व्यवसाय का चुनाव करें, इस असमंजस की स्थिति में व्यक्ति कई बार आत्महत्या कर लेता है इस प्रकार की आत्महत्या बहुत ज्यादा है, लगभग 300 करीब है,सभी आंकड़े वर्ष 2014 के हैं स्रोत विकीपीडिया.

अध्ययन 2019 और 2020

आज हमें है जानकर हैरानी होती है कि हमारे भारतीय समाज में आत्महत्या करने वाले युवाओं में 19 प्रतिशत मानसिक बीमारी और 5% प्रेम प्रसंग के चलते जान दे देते हैं हमारे देश में कोरोनावायरस अवसाद और चिंता के मामले 40% तक बढ़े हैं युवा में आत्महत्या करने के विचार पहले की तुलना में अधिक आ रहे हैं, अमेरिका में एक अध्ययन के अनुसार दुनिया में अवसाद और चिंता के मामले 40% तक बढ़े हैं, वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन डब्ल्यूएचओ के अनुसार प्रतिवर्ष 800000 लोग आत्महत्या करते हैं, सबसे ज्यादा प्रभावित निम्न और मध्यम आय वाले देश हैं, क्योंकि यहां मानसिक बीमारी को सामान्य मान लिया जाता है, और मानसिक बीमारी से पीड़ित 76 प्रतिशत से 85 प्रतिशत तक लोगों को कोई इलाज नहीं मिल पाता ।अगर हम बात करें 18 से 29 साल की तो उनमें आत्महत्या का सबसे बड़ा कारण अवसाद है, ऐसे में लोगों को चाहिए, कि वह बच्चों के मन से आत्महत्या करने के विचार को निकालने के लिए लगातार प्रयासरत रहें।

अमेरिकी संस्था सुसाइड अवेयरनेस ऑफ एजुकेशन के अनुसार युवाओं में आत्महत्या करने का कोई एक कारण नहीं है, बहुत से ऐसे कारण है जो युवाओं के लिए आत्महत्या का खतरा बढ़ा रहे हैं, मानसिक बीमारी, मादक द्रव्य व्यसन, बेरोजगारी, गरीबी, और किसी भी बड़ी बीमारी का होना, दुनिया में प्रतिवर्ष जितने भी आत्महत्या कर रहे हैं उनमें से 45% मानसिक बीमारी के शिकार होते हैं, आज समाज में सबसे बड़ी बीमारी अवसाद है, जिसे डिप्रेशन कहा जाता है, नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो एनसीआरबी के आंकड़ों के अनुसार 2019 में देश में 139000 लोगों ने आत्महत्या की जिनमें 67 प्रतिशत यानी 93 हजार लोग ऐसे थे, जिनकी आयु 18 से 45 वर्ष थी, वर्ष 2018 का आंकड़ा 890000407 या यानी 2019 में युवा पीढ़ी में आत्महत्या का खतरा 40% बढ़ गया, देश में आत्महत्या का कारण पारिवारिक झगड़े, मद्यपान और मानसिक बीमारी है, ।

इसमें पारिवारिक कलह से होने वाली आत्महत्या 19% है प्रेम प्रसंग से 5% है अन्य 23 प्रतिशत है, एवं जिनका कोई कारण नहीं है वह 12% है। भारत में आत्महत्या के आंकड़े अति सोचनीय हैं और इस विषय पर हमें तत्काल प्रभाव से जागरूक होना चाहिए, तथा जिनमें आत्महत्या का खतरा अधिक है, उनका इलाज अवश्य कराना चाहिए जैसे जो युवा तनाव (डिप्रेशन) नशे और पारिवारिक कलह से ज्यादा परेशान होते हैं, ऐसे युवा का इलाज आवश्यक हो जाता है।

आत्महत्या को कम करने के उपाय

यहां पर डॉक्टर लीव के अनुसार कुछ उपचार बताए जा रहे हैं, जिन्हें अपना कर आत्महत्या के खतरों को कम करके रोका जा सकता है।

टॉक थेरेपी

इसमें कुछ नेगेटिव और पॉजिटिव भाव को नोट किया जाता है, इसके बाद पीड़ित से बात करके नकारात्मक भावों को सकारात्मक भागों में परिवर्तित किया जाता है, टॉक थेरेपी कारगर तो है लेकिन इतनी नहीं है कि पीड़ित को पूरी तरह से ठीक कर दे, अगर किसी युवा में आत्महत्या का खतरा बढ़ रहा है, तो जाहिर है चिंता और तनाव की दर बहुत ज्यादा हो चुकी है, ऐसे में दवाइयां आवश्यक हो जाती हैं।

दूसरा है दिनचर्या या लाइफ़स्टाइल

ऐसे लोग जिनमें आत्महत्या का खतरा अधिक है, उन्हें अपनी दिनचर्या पर अधिक ध्यान देना चाहिए, कई अध्ययन के अनुसार यह बात सामने आई है, कि दिनचर्या किसी भी मानसिक बीमारी को कम करने में 5% तक कारगर है, आत्महत्या के खतरे से बचने के लिए कुछ बदलाव अति आवश्यक है, जैसे ड्रग्स और अल्कोहल से बचें, रेगुलर एक्सरसाइज करें, अच्छी और पूरी नींद लें, ताकि हम आत्महत्या के खतरों को कम कर सकें। हम बताते चलें कि दुनिया के 5 सबसे अधिक मानसिक बीमारी से ग्रस्त देश इस प्रकार हैं।

भारत 5.7 % करोड़

चीन 5.5% करोड़

अमेरिका 3.5% करोड़

ब्राजील 2.7 प्रतिशत करोड़

इंडोनेशिया 91. 6 लाख स्रोत डब्ल्यूएचओ।

निष्कर्ष

इन आंकड़ों के अनुसार भारतीय समाज में आत्महत्या की समस्या की दर सबसे अधिक है, अतः अब हमें जागने की आवश्यकता है, और समाज के विभिन्न वर्गों के युवाओं में समस्या को समझने, साझा करने, एवं उन्हें तर्कसंगत दिशा निर्देश देने में सहयोग देना अति आवश्यक है। अब समय आ गया है कि इस विशाल युवा शक्ति को सामाजिक अन्याय को समाप्त करने तथा विकास एवं राष्ट्रीय सामूहिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लगाया जाए, जिसके लिए वह वास्तव में बने हैं, अवसाद और चिंता के वातावरण के स्थान पर आशा और विश्वास एवं आस्था के वातावरण की आवश्यकता को उन्हें समझाना होगा, और युवाओं को संगठित करने एवं उनमें समस्या को समझने और उसे साझा करके समाप्त करने के लिए प्रेरित करना होगा, इसलिए आत्महत्या की समस्या को समाप्त करने के लिए हमारे संपूर्ण समाज को जागना होगा, तभी हमारे समाज का युवा असंतोषजनक अवस्था से संतोषजनक अवस्था में आ सकता है।

संदर्भ सूची

1.भारतीय समाज मुद्दे एवं समस्याएं

डॉ धर्मवीर महाजन एवं डॉक्टर कमलेश महाजन विवेक प्रकाशन नई दिल्ली.

2.दैनिक भास्कर न्यूज पेपर.

3सिंह,जितकृषणा, सामाजिक विघटन, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ 2006,

4.विकीपीडिया 2014,2016.

5.डब्ल्यू डब्ल्यू जागरण.कोम

6.भारत. कोम भारतकोश.

7.डब्ल्यू. डब्ल्यू. बी. बी. सी. कोम

8एम. पत्रिका.कोम.

9.समकालीन भारत में सामाजिक समस्याएं

एम. एल.शर्मा,डी.डी.गुप्ता.साहित्य भवन पब्लिकेशन

10.गिडेंस, एंटनी. 2002. सोशयोलॉजी (चौथा संस्करण) गर्थ,

11..हैंस तथा सी. राईट मिल्स (संपा.) फ्रॉम मैक्स वेबर ।

12. खिलनानी, सुनील. 2002. द आइडिया ऑफ़ इंडिया,

13.पेंगविन बुक्स, नयी दिल्ली पटेल, सुजाता तथा कुशलदेव (संपा.). 2006.
14.अर्बन सोशयोलॉजी (ऑक्सफोर्ड इन इंडिया रीडिंग्स इन सोशयोलॉजी एंड एंथ्रोपॉलोजी सीरीज़)
15.ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली श्रीनिवास एम. एन. सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया।
16.Värnik, Peeter (2012). "Suicide in the World". International Journal of Environmental Research and Public Health. 9 (3): 760–771. PMC 33672758. PMID 22690161.
17."Gender differentials and state variations in suicide deaths in India: the Global Burden of Disease Study 1990 2016". Lancet. 1 October 2018. faf 20 October 2018.
18.Using the phrase 'commit suicide' is offensive to survivors and frightening to anyone contemplating taking his/her life. It's not the same as 'being committed' to a relationship or any other use of it as a verb. Suicide prevention (SUPRE) World Health Organization (2012)
19.Suicides in Indiax Archived 2014-05-13 at the Wayback Machine The Registrar General of India, Government of India (2012)
20. "India's Mental Health Crisis". The New York Times. 2014-12-30.Bray, Carrick (2016-11-04). "Mental Daily Slams India's Mental Health System - Calls It 'Crippling', 'Misogynistic' "The Huffington Post.
21."Every hour, one student commits suicide in India" . Hindustan Times (अंग्रेज़ी में). 2017-04-08. अभिगमन तिथि 2020 06-21.
22. Garai, Shuvabrata (2020-01-29). "Student suicides rising, 28 lives lost every day". The Hindu आइ०एस०एस०एन० 0971-751. अभिगमन तिथि 2020-06-21.